दिनांक :- 27-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ. फारूक आज़म

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्राचीन इतिहास

इकाई :- सात

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- धर्म

हीनयान के कुछ महत्वपूर्ण उपसंप्रदाय

① स्थविरवादी सम्प्रदाय (थेरवादी) :- परम्परागत धर्म था। सांची का बौद्ध विहार इस परम्परा से जुड़ा हुआ था।

② सर्वास्तिवादी :- यह मथुरा तथा कश्मीर क्षेत्र में लोकप्रिय था। इसका सिद्धान्त संस्कृत में है। यह स्थविरवादियों से इस रूप में भिन्न है कि इसका मानना है कि दृश्य जगत

के धर्म पूर्णतः क्षणिक है। प्रत्युत सदा अन्तर्निहित रूप
मे विद्ययमान रहते है।

③ सौत्रान्तिक :- इसी की धारणा है कि बाह्य जगत संबंधी
हमारा ज्ञान एक संभव अनुमान मात्र है।

④ सामित्या : इस मत ने यहां तक प्रगति की कि आत्मा भाव
के सिद्धान्त को स्वीकार करते हुए एक ऐसे आत्मा
की परिकल्पना की जो एक जीवन से दूसरे जीवन मे
चली जाती है

हीनयान बौद्ध सम्प्रदाय मे बुद्ध के जीवन से 4 पशु जुड़े हुए है।

हाथी :- बुद्ध के गर्भ मे आने का प्रतीक

घोड़ा :- गृह त्याग का प्रतीक, सांड़ :- यौवन का प्रतीक

शेर :- समृद्धि का प्रतीक

बौद्ध धर्म मे महीने मे चार दिन पवित्र होते थे जिन्हे उप
वास को दिन माना जाता था। ये दिन है।

Scanned with CamScanner

अमावस्या पूर्णिमा तथा दो चतुर्थी दिवस।

अष्टमहास्थान :- ① लुम्बिनी ② बोधगया ③ सारनाथ ④ कुशीनारा ⑤ श्रावस्ती ⑥ संकास्य ⑦ राजगृह ⑧ वैशाली

आंध्र प्रदेश में अमरावती तथा नागार्जुनकोण्डा

बिहार :- नालंदा। गुजरात :- जूनागढ़, बल्लभी

मध्य प्रदेश :- सांची तथा भरहुत

उड़ीसा :- धौलगिरी, उत्तरप्रदेश :- कन्नौज, कौशांबी तथा मथुरा

पश्चिमी बंगाल : जगदल तथा सोमपुरी

प्रतीक :- हीनयानियों के लिये बुद्ध शिक्षक थे देवता नहीं

① ज्ञान प्राप्ति : बोधिवृक्ष और नीचे में वज्रासन मुद्रा

② धर्मचक्र परिवर्तन :- माला चढ़ाया हुआ चक्र

③ चक्रम :- पदयात्रा का प्रतीक ④ स्तूप : मृत्यु का प्रतीक

महायान बौद्ध धर्म का विकास :- महायान बौद्ध धर्म के दो मुख्य भाग है।

Scanned with CamScanner

① शून्यवाद या माध्यमिक ② विज्ञानवाद अथवा योगाचार

① माध्यमिक (शून्यवाद) :- इस मत के प्रवर्तक नागार्जुन थे जिनकी प्रसिद्ध कृति माध्यमिककारिका है। इसे सापेक्षवाद भी कहा जाता है। इस दर्शन के अनुसार प्रत्येक वस्तु किसी न किसी कारण से उत्पन्न हुई है अतः वह शून्य है। नागार्जुन ने प्रतित्यसमुत्पाद को भी शून्यमाना है शून्यवाद का अर्थ विनाशवाद नहीं है। यहां शून्यता दो प्रकार की मानी गयी है।

① अस्तित्व शून्यता ② विचार शून्यता

नागार्जुन के अतिरिक्त इस मत के अन्य विद्वान थे। चन्द्रकीर्ति, शान्तिदेव, आर्य देव, शान्ति रक्षित आदि। नागार्जुन सातवाहन नरेश यज्ञ श्री सातकर्णी के समकालीन थे जबकि कनिष्क के दरबार से उनका जुड़ाव था ही। बुद्धपालित तथा भाविवेक पांचवी शताब्दी में शून्यवाद के महत्वपूर्ण भाष्यकार थे।

(2) विज्ञानवाद (योगाचार) :- इस मत का विकास ईसवी की तीसरी सदी में मैत्रीयनाथ द्वारा किया गया है। आगे उनके शिष्य असंग ने इसे और स्पष्टता दी। कालांतर में वसुबंधु, दिङ्नाग तथा धर्मकीर्ति इस दर्शन से जुड़ गये।

यह मत चित्त अथवा विज्ञान को ही एकमात्र सत्ता स्वीकार करता है। इसमत में योगाभ्यास तथा आचरण पर विशेष बल दिया गया है।

असंग द्वारा लिखित सूत्रालंकार इस धर्म से संबंधित प्राचीनतम ग्रंथ है। इसका सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ लंकावतारसूत्र है। इस दर्शन का मानना है कि संसार को निर्माण चेतना ने किया है जो स्वप्न से अधिक वास्तविक नहीं है।

विज्ञानवादी चित्त को आलय विज्ञान कहते हैं क्योंकि वह सभी प्रकार के विज्ञानों का आलय (घर) है।

विज्ञानवादी भी शून्यवादी की तरह ब्राह्य पदार्थों का

Scanned with CamScanner

अस्तित्व स्वीकार नहीं करते हैं किंतु वे चित्त की सत्ता को मानते हैं क्योंकि ऐसा मानने पर कोई विचार प्रति पादित नहीं किया जा सकता है

दिङ्नाग (दार्शनिक) :- इन्होंने पाँचवी शताब्दी में बौद्ध न्याय का विकास किया। उसके कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं ① प्रमाण समुच्चय ② न्याय प्रवेश ③ आलम्बन परीक्षा :- इन्हें मध्यकालीन न्याय के जनक के रूप में निर्दिष्ट किया जाता है।

धर्म कीर्ति 7वीं सदी को भारत का काण्ट कहा जाता है। महायान बौद्ध धर्म में एक देवकुल का जिसमें पाँच ध्यानी बुद्ध की परिकल्पना की गई, ये हैं :- वैरोचन, अमोघ्य, रत्नसंभव, अमिताभ तथा अमोघ सिद्धि देवता। इनमें से प्रत्येक बुद्ध का संबंध एक बोधिसत्व और एक देवी से रहा है जिनका नाम तारा है।

Scanned with CamScanner

महायानी लोग तारा (प्रज्ञा पारमिता), मंजुश्री तथा अवलोकितेश्वर की पूजा करते थे।

चीनी यात्री इत्सिंग ने जूलूसों को देखा था जिसमें बुद्ध तथा बोधिसत्वों की प्रतिमाएँ ले जाई जाती थी।

हीनयान तथा महायान में अंतर :—

हीनयान की मान्यता है कि सभी को अपनी मुक्ति का मार्ग स्वयं ढूंढ़ना होगा और अधिक से अधिक निर्वाण के मार्ग में हम दूसरों को उदाहरण या उपदेश के द्वारा सहायता कर सकते हैं। महायान गुणों के हस्तांतरण में विश्वास करता है।

हीनयान बौद्ध धर्म की ऐतिहासिकता में विश्वास करता है जबकि महायान बोधिसत्व में।

रूढ़िवादी हीनयान सम्प्रदाय ने अर्हत (बोधिसत्व) पद की प्राप्ति के लिये 9 चर्याओं तथा 10 अनुशासनों का पालन है।